International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 130-132

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 130-132
www.allresearchjournal.com
Received: 11-10-2015
Accepted: 14-11-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

मृगनयनी उपन्यास में इतिहास और कल्पना

डॉ. शिवदत्त शर्मा

उपन्यास किसी भी साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। हिन्दी साहित्य की उपन्यास परम्परा बडी स्मृद्ध है। मृगनयनी वृंदावनलाल वर्मा का प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है। मध्ययुगीन मध्य भारत के गौरवमयी इतिहास का यह उपन्यास सन्दर्भ ग्रंथ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने महान ग्रंथ चिन्तामणि भाग–1 में इतिहास के मर्म पर प्रकाश डालते हुए लिखा है– प्रसिद्ध प्राचीन नगरों और गढों में खण्डहर राज प्रासाद आदि जिस प्रकार सम्राटों के ऐश्वर्य, विभूति, प्रताप, आमोदप्रमोद और भोगविलास के स्मारक हैं, उसी प्रकार उनके अवसाद, विषाद नैराश्य और घोर पतन के स्मारक हैं। मृगनयनी उपन्यास में भी ऐतिहासिक पात्रों के जीवन की सफलताओं, त्रुटियों को कल्पना का पुट देकर उसे सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

डॉ शशिभूषण सिंहल ने वृंदावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों की ऐतिहासिकता पर विचार करते हुए लिखा है–वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों के कथा स्त्रोतों का आधार ख्यात इतिहास, स्थानीय इतिहास, अवशिष्ट वातावरण तथा लोक कथाएं हैं। इनमें वे अपनी कल्पना का योग देते हैं। वे इतिहास की खोजबीन कर तथ्य जुटाते हैं और उन्हें विचार विवेचन कल्पना से कार्य–कारण, श्रृंखला प्रदान करते हैं। वे आगे लिखते हैं कि इतिहास, परम्परा, और जनश्रुतियों को आधार बना कर अपनी सृजनात्मक एवं जीवन की अनुभूति से प्रभावित कल्पना द्वारा युग और जीवन का जो चित्र प्रस्तुत उपन्यास में अंकित किया है, वह अपने आप में अद्वितीय है।[1]

मृगनयनी उपन्यास की कहानी राई गांव की गुजर कन्या निन्नी जिसे उपन्यास में मृगनयनी नाम दिया गया है और ग्वालियर के वीर एवं प्रतापी राजा मानसिंह तोमर के प्रेम और कर्तव्य की कहानी है। मानसिंह तोमर का शासन काल सन् 1486 से 1516 ई तक इतिहांस में प्रमाणित है। इतिहास के अनुसार तोमर काल ग्वालियर का सुनहरा काल रहा है।उनके शासनकाल के समय दिल्ली पर लोदी वंश अर्थात् सिकन्दर लोदी का शासन था। उसने पांच बार ग्वालियर पर आक्रमण किया और पांचों बार ही असफल रहा। यह भी सत्य है कि उसने ग्वालियर को जीतने की कामना से ही आगरा बसाया था। मालवा का विलासी सम्राट ग्यासुद्दीन और गुजरात का सम्राट महमूद बर्घरा भी ग्वालियर की ओर आंख गडाए बैठे थे, परन्तु मानसिंह तोमर एक जागरूक राजा था तथा उसके जीते जी कोई उसे जीत न पाया। उपन्यासकार वृंदावन लाल वर्मा ने इन राजनीतिक एवं ऐतिहासिक घटनाओं की पृष्ठभूमि में मानसिंह और मृगनयनी के प्रणय एवं अद्वितीय वीरता की कहानी की योजना की है।

इसमें संदेह नहीं कि राजा मानसिंह तोमर ऐंतिहासिक पात्र है।उसकी वीरता एवं कला प्रियता से इतिहास अटापटा है। स्वयं उपन्यासकार वर्मा ने स्पष्ट किया है कि गूजरी रानी मृगनयनी के साथ मानसिंह का विवाह सन् 1492 के आसपास हुआ होगा। मान–मन्दिर और गूजरी महल के सृजन की कल्पना की प्रेरणा मृगनयनी ही रही होगी। बैजनाथ गायक अर्थात् बैजूबावरा मानसिंह और मृगनयनी के गायक थे। गूजरी टोडी, मालगूजरी इत्यादि राग इसी मृगनयनी के नाम पर बने हैं।

इसी प्रकार गुजरात के राजा महमूद बर्घरा का प्रसंग भी ऐतिहासिक है। भोजन और उसका कलेवा फारसी की प्रसिद्ध रचना भीराणे सिकन्दरी, में अंकित है। इसी प्रकार राई गांव का बोधन पुजारी भी ऐतिहासिक पात्र है। बोधन की ऐतिहासिक के सम्बन्ध में उपन्यासकार ने उसके परिचय में लिखा है–बोधन ब्राह्मण ऐतिहासिक व्यक्ति है।उसे मारने वालों की बर्बरता का मैने थोडा बहुत वर्णन किया है।उसकी करूणा का लाघवमात्र प्रस्तुत किया है–करना पडा है। इस तरह उपन्यासकार के अनुसार प्रमाणिक रूप से मृगनयनी के अधिकांश प्रसंग इतिहास की कसोटी पर खरे उतरते हैं।

मृगनयनी के पात्र ऐतिहासिक एवं काल्पनिक हैं। मानसिह, मृगनयनी, बोधन, विजयजंगम, सिकन्दर लोधी, ग्यासुद्दीन, नासुरूद्दीन, महमूद बर्घरा आदि पूर्णतः ऐतिहासिक पात्र हैं। इसी प्रकार कला, पिल्ली, पोटा, नायकिन आदि काल्पनिक पात्र हैं। यद्यपि लाखी और अटल भी इतिहास से अनुमोदित पात्र है किन्तु उनके कार्य एवं गतिविधियों में कल्पना का पुट दिया गया है।

सिकन्दर लोदी के आक्रमण, ग्यासुद्दीन के बेटे नसरुद्दीन की कामुकता तथा उसकी पन्द्रह हजार रानियां होना, बोधन का बर्बरता पूर्ण वध, मानसिंह और विजय जंगम की मित्रता, मृगनयनी की वीरता आदि अनेक घटनाओं का उल्लेख ग्वालियर गजेटियर में है। उपन्यासकार वर्मा ने इसके अतिरिक्त इतिहास की बिखरी हुई कडियों को जोडने के लिए कई किंवदन्तियों और लोककथाओं का भी सहयोग लिया है। कुछ अतिशयोक्ति पूर्ण घटनाओं जैसे मृगनयनी द्वारा अरने भैंसे के सींगों को मरोडना आदि घटनाओं का उल्लेख केवल आकर्षण पैदा करने के लिए ही किया गया लगता है। लाखी और अटल के नटों के साथ सम्बन्ध का भी जनश्रुति के आधार पर थोडा बहुत परिवर्तन कथानक के अनुरूप प्रयोग किया गया है।[2]

वृदावनलाल वर्मा ने उपन्यास की भूमिका में लिखा है– किंवदन्ती है कि किसी नटनी, बेडनी को नरवर किले से बाहिर रस्से पर टंगे–टंगे जाकर जो किले के बाहिर एक पेड से बंधा हुआ था, चिट्ठी ले जाने के लिए कहा और वचन दिया कि यदि चिट्ठी बाहिर पहुंचा दो तो नरवर का आधा राज्य दे दिया जाएगा। नटनी रस्से के सहारे किले के बाहिर आ गई। जब उसी रस्से के सहारे वापिस आ रही थी, तब वचन देने वाले ने रस्से को काट दिया और नटनी नीचे खड्डे में गिरकर चकनाचूर हो गई। वर्मा लिखते हैं कि मैंने इस किंवदन्ती का प्रयोग दूसरे प्रकार से किया है। रस्से से बाहिर जाती हुई मरी तो नटनी है किन्तु चिट्ठी ले जाने वाली नटनी नहीं अपितु लाखी और अटल को किले से बाहिर ले जा कर ग्यासुद्दीन के पास ले जाने का षडयन्त्र रचने वाली पिल्ली को खड्ड में गिराने की घटना का तथा रस्सी राजा ने नहीं लाखी ने काटी थी का उल्लेख किया गया है। उपन्यास में इस प्रकार की इतिहास अनुमोदित कल्पना का उल्लेख उपन्यास की सुंदरता को बढा देता है।

वर्मा जी के अनुसार यह एक किंवदन्ती है कि मानसिंह की दो सौ रानियां थीं कुत्रचित् इनकी संख्या अधिक भी कही जाती है परन्तु किले के गाइड के अनुसार मानसिंह की आठ रानियां थीं और नवमी रानी मृगनयनी थी। वर्मा जी ने आठ रानियों वाली किंवदन्ती को ही विश्वसनीय माना है तथा उसी का ही उल्लेख उपन्यास में किया है।

इसी तरह मृगनयनी के पुत्रों को लेकर भी दो किंवदन्तियां प्रचलित हैं– पहली के अनुसार मृगनयनी के दोनों पुत्रों ने मृत्यु के भय से आत्महत्या कर ली थी तथा दूसरी के अनुसार मृगनयनी ने अपने पुत्रों को राज्य न दिलवाकर सुमन मोहिनी के बेटे विक्रमादित्य को राज्य दिलवाया था। वर्मा जी ने इसी को आधार बनाया है।

उपन्यासकार वर्मा ने भी अन्य उपन्यासकारो की तरह इतिहास और कल्पना का मणि कांचन मिश्रण बडी सूझबूझ से किया है।इससे न केवल उपन्यास में रोचकता बढी है अपितु काल्पनिक अथवा किंवदन्तियों को भी विश्वसनीय बनाने का प्रयास किया गया है। [3] इस के सहयोग से विस्तृत बिखरी हुई ऐतिहासिक सामग्री को सूत्रबद्ध करने में सहायता मिली है।उपन्यास में प्रमुख पात्र ऐतिहासिक हैं तथा कुछ गौण पात्र काल्पनिक हैं। पिल्ली, पोटा, कला, निहालसिह, मटरू आदि पात्र काल्पनिक हैं।

इसी प्रकार इस उपन्यास में अनेक घटनाएं ऐसी हैं जो काल्पनिक हैं। मृगनयनी के विवाह से पूर्व की घटनाएं मुख्यतः काल्पनिक हैं। निन्नी और लाखी का परस्पर हंसी मजाक, शौर्य और मस्ती, लाखी की मां की मृत्यु और उसका निन्नी और अटल के साथ रहना आदि काल्पनिक है उसका इतिहास के साथ सम्बध नहीं है। इसी तरह नटों के विविध कार्यकलाप और ग्राम्य समाज का होली के उत्सव के समय का वातावरण सब कुछ लेखक की कल्पना का कमाल है।

मृग नयनी और राजा मानसिंह का प्रथम मिलन प्रसंगादि भी कल्पना के योग से ही अत्यन्त रोचक बना है। नरवर का दावेदार राज सिह आदि पात्र ऐतिहासिक पात्र हैं तो कला लेखक की कल्पना शक्ति का ही सुफल है।

इसके अतिरिक्त अनेक ऐतिहासिक पात्रों के क्रियाकलाप जैसे ग्यासुद्दीन मुहमूदबर्घरा नसीरूद्दीन बैजू, लाखी, कला, अटल, बोधन, विजयजंगम, आदि पात्रों से सम्बन्धित घटनाएं भी काल्पनिक हैं। बोधन पुजारी और विजयजंगम के वादविवाद तर्क–वितर्क और दिनचर्या सम्बन्धित घटनाओं में भी कल्पना के रंग भरे हुए हैं।

इतिहास को इतिहास के रूप में उपस्थित करना उपन्यास में सम्भव नहीं होता बल्कि ऐसा केवल इतिहास लेखन में ही हो सकता हैं। उपन्यास में इतिहास और कल्पना का मिश्रण ही इसे लोकप्रिय बनाता है। यही इतिहास और उपन्यास में अन्तर है।यह उपन्यासकार की कल्पना का ही चमत्कार है कि वह इतिहास को कल्पना में लपेट कर इस तरह प्रस्तुत करता है कि पाठकों में अभिरुचि पैदा कर उसे पाठकों को पढने के लिए आकर्षित कर पाता है, अन्यथा पाठकों को कोरे इतिहास में विशेष रुचि नहीं होती। [4]

वर्मा जी का मृगनयनी उपन्यास अद्भुत उपन्यास है। इसमें रोमांस शब्द का विधा के रूप में नहीं अपितु एक विशेष प्रवृत्ति के रूप में प्रयोग किया जाता है। रोमांस वर्मा की जीवन सम्बन्धी धारणा का अभिन्न अंग है।उनका रोमांस दैनिक जीवन में व्याप्त एकरसता को ताजगी व स्फूर्ति अथवा नवीनता उत्पन्न करना है। वर्मा साधारण जीवन की भूमि से विवेक,सन्तुलन, एवं कर्मठता तथा अन्तर्दृष्टि द्वारा रोमांस को प्रेरित करने वाले प्रमुख तत्वों को जुटाते है।

मृगनयनी के राई गांव के ग्रामवासियों का जीवन एकरसता में निमग्न था। दिन में खेतों में काम करनां और रात को मचान पर बैठकर खेत की जंगली पशुओं से रखवाली करना। वर्मा जी ने इस साधारण जीवन में ताजगी एवं स्फूर्ति उत्पन्न करने के सिए इसी जीवन में होली के त्योहार की संकल्पना की है। इस अवसर पर वहां के लोगों के पास एक दूसरे के मुख पर मलने के लिए गुलाल या कीमती रंग नहीं थे, किन्तु गांव में कीचड व गोबर की कमी नहीं थी। लाखी और निन्नी एक दूसरे को कीचड से सान देते हैं। इस प्रसंग की सृजना जहां उपन्यास को स्वाभाविकता से भर देता है वहीं वर्मा जी की कल्पना शक्ति का भी अहसास होता है।

निश्चय ही वर्मा जी ने इतिहास के विकस क्रम की जर्जर कडियों के मूल कारण पर प्रकाश डालकर अपनी औपन्यासिक रचनाओं द्वारा पाठकों को जीवन में स्वस्थ विचारों का अनुगमन करने की प्रेरणा भी दी है।

इस विवेचन से स्पष्ट होजाता है कि मृगनयनी उपन्यास में वृन्दावन लाल वर्मा ने इतिहास, कल्पना, और जनश्रुति व किंवदन्तियों का सुन्दर प्रयोग किया है। यह भी सत्य है कि किसी भी ऐतिहासिक पात्र को केवल ऐतिहासिक तथ्य देने से उपन्यास के पात्र के रूप में चित्रित नहीं किया जा सकता।इस तरह वह तो केवल जीवन ही बन कर रह जाएगी चरित्रचित्रण नहीं। केवल कल्पना को आधार बना कर चित्रित किए गए पात्र व घटनाएं ऐतिहासिक प्रभाव नहीं छोड सकते।वर्मा जी ने जनश्रुति का भी उपयोग भी मानव के चरित्र की उज्ज्वलता के अनुरूप ही किया है।इस तरह इसमें संदेह नहीं कि वर्मा जी का उपन्यास मृगनयनी इतिहास, कल्पना, का अद्भुत संयोग है। उन्होंने मूल कथा में मानसिंह और मृगनयनी के कथा विकास के लिए जनश्रुतियों तथा कल्पना का प्रयोग इतिहास अनुकूल ही किया है। इसके साथ ही तात्कालिक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, व धार्मिक जीवन को व्यापक स्तर पर सजीव रूप से चित्रित करने के लिए भी इतिहास की प्रमुख घटनाओं के साथ जनश्रुति व कल्पना का आश्रय लिया गया है। कल्पना का प्रयोग इस प्रकार किया गया है कि कहीं भी ऐतिहासिकता को आघात नहीं पहुंचा । [5]

इस तरह इसमें संदेह नहीं कि मृगनयनी उपन्यास इतिहास और कल्पना का सुन्दर उदाहरण है जिसमें कल्पना का मिश्रण होते हुए भी इतिहास को अक्षुण्ण रखा गया है। यह उपन्यास वर्मा जी के

कला–कौशल का भी अद्भुत नमूना है।

सन्दर्भ सूचि

1. डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ69
2. डॉ मधुरेश हिन्दी उपन्यास का विकास पृ132
3. चन्द्र कान्त आधुनिक हिन्दी उपन्यास–सृजन और आलोचना पृ75
4. शिवदान सिंह चौहान हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष पृ67
5. ज्योत्स्ना श्री वास्तव हिन्दी उपन्यासों में प्राचीन और नवीन जीवन मूल्यों का संघर्ष पृ178